तृतीय अध्याय

''विवेच्य नाटकों में चित्रित सामाजिक संदर्भ''

तृतीय अध्याय

'विवेच्य नाटकों में चित्रित सामाजिक संदर्भ'

3.1 प्रस्तावना -

राजनीति, धर्म तथा समाज एकदूसरे पर आश्रित होते हैं | देश की परिस्थितियों का समाज के आचरण पर गदरा प्रभाव पड़ता है |कबीरकालीन भारत में दो समाज प्रमुख रूप से थे - एक हिंदू समाज और दूसरा विजेता के रूप में आया हुआ मुस्लिम समाज | "ग्रीक, शक, हुण, कुषाण आदि न जाने कितनी जातियाँ इस देश में विजेता के रूप में आयी और भारत की संस्कृति तथा समाज के निर्माण मे अपना योगदान दे गयी | इनमें से कुछ जातियाँ तो हिंदू संस्कृति से तादात्म्य स्थापित न कर सकी न कुछ राजनीतिक दृष्टि से तो अवश्य विजयी रहीं परंतु सभ्यता तथा संस्कृति के क्षेत्र में परास्त होकर कालांतर में वे भारतीय समाज के विशाल समुद्र में लीन हो गयी | मुसलमानों के पश्चात हिंदू समाज की व्यवस्था कुछ भीन्न ही रही |"[1] कबीर कालीन समाज मे आयी हुई राजनीतिक उथल पुथल की वजह से तथा निधर्मी शासकोंकी कुटनीति, अन्याय, शोषण एवं अत्याचारों की वजह से भारतीय जनजीवन को हानी पहुँचती थी | इसी कारण कबीर काल की राजनीतीक धर्माधता के कारण समाज का विघटन हुआ था | धर्म के ठेकेदार स्वयं को समाज के सर्वेसर्वा समझने लगे थे | इससे सामान्य वर्ग दुरावस्था की खाई में लोटने लगा था | समाज में जातिगत भेदभाव बढने लगा था |

परंतु कबीर कालीन इस्लाम एक अनोखी जीवन शक्ति तथा नवीन महत्वाकांक्षाओं को लेकर अपने धर्म के विस्तार में तत्पर हुआ |

3.2 जाति-पाँति की समस्या -

भारतीय समाज में जाति - पाँति की समस्या प्राचीन काल से ही गंभीर रूप में पाई जाती है | कबीर काल भी इसके लिए अपवाद नहीं है | कबीर के समय भी भारतीय समाज का

जाति और उपजाति में विभाजित था और जातिय भेदाभेद की भावना शिखर पर पहुँच चुकी थी | जिसका विवेच्य नाटकों मे सफल रूप में चित्रण पाया जाता है |

कबीर कालीन समाज में हिंदू और मुस्लिम यह प्रमुख दो धर्म पाये जाते हैं | दोनों धर्म एक दूसरे के विरोध में खड़े पाये जाते हैं | हिंदू धर्मीय, मुसलमानों पर किचड़ उछालते हैं तथा मुस्लिम हिंदू लोगों को पानी में देखते हैं | उनसे बेहद नफरत करते हुए दिखाई देते हैं | जरा जरासी बात पर हिंदू और मुसलमानों में मारकाट होती रहती है | छोटी सी छोटी बातें तक दंगाफसाद की जड़ बन जाती हैं | स्वयं को कट्टर धर्मीय साबीत करणे वाले इन दो धर्मो में भी अलग अलग जातियाँ पाई जाती हैं |

हिंदू धर्म में ब्राह्मण जाति सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है | स्वयं को सर्वश्रेष्ठ समझने वाली ब्राह्मणजाति में भी अनेक प्रकार की उपजातियाँ पायी जाती हैं | ब्राह्मणों की जाति में 'गौड़' ब्राह्मण सबसे श्रेष्ठ माने जाते हैं | धर्म के सभी हिंदू ही हैं, पर हिंदू धर्म के अन्दर भी बहुत से धर्म संप्रदाय पाये जाते हैं | काशी में भी मठ - मन्दिर, जात पात का बहुत बोलबाला है | हिंदू धर्म में ही शैव, वैष्णव, शाक्त आदि संप्रदाय पाये जाते हैं | उच्चवर्णीय ब्राह्मणोंमें भी अनगिनत जातियाँ हैं | एक एक जाति भी फिर उपजात तथा हजारों जातियाँ दृष्टिक्षेप में आती हैं | खुद को ब्राह्मण समझनेवाले एक ही समाज के लोग अलग अलग मान्यता के कारण विभाजीत हो गए हैं |

भीष्म साहनी ने अपने नाटक 'कबिरा खड़ा बजार में' मे यह उचित प्रकार से स्पष्ट किया है | कायस्थ और कोतवाल के वार्तालप से ब्राह्मणों की उपजातियों का विश्लेषण होता है |

"कायस्थ : धर्म के तो सब हिंदू ही हैं साहिब, पर हिंदु धर्म के अंदर भी बहुत से धर्म संप्रदाय हैं |

कायस्थ : ब्राम्हणों की ही १०८ जातें हैं |"[2]

एक एक जाति की फिर उपजाति हैं | हजारों जातियाँ हैं | ब्राम्हणों में भी अपनी अलगता सिद्ध करणे के लिए वैष्णव लोग चन्दन का टीका लगाते हैं तथा शैव विभूति लगाते हैं | इस

प्रकार एक ही धर्म के होने के बावजूद भी लोग खुद को एक दुसरेसे अलग दर्शाने के प्रयत्न करते हुए पाये जाते हैं |

3.2.1 ऊंची जातिवालों का निम्नजातिवालों से बर्ताव -

काशी में उच्च जाति के नामपर ठग ब्राह्मण भी अपनी झोली भर लेते हैं | सिर्फ ठग ही नहीं, धूर्त, पाखंडी, लोभी और लंपट भी हैं | स्वयं को उच्च वर्णीय मानने वाले ब्राह्मण वर्तन मांजकर ऊपर खाना खाते हैं कि कहीं भोजनपर किसी कमजात की छाया न पड़े और भोजन अपवित्र न हो जाए | वे निम्मजाति वालों के साये से भी नफरत करते हैं | शूद्र लोगों का मुख देखते ही वे छुत मान लेते हैं | तथा स्वयं को शूचिर्भूत करणे के लिए स्नान कर लेते हैं | ऐसे परम पाखण्ड़ियों से काशी भरी पड़ी हुई है | ऊंचीजातवाले निम्मजातवालों को हमेशा कमीनी जात, बदजात कहकर तिरस्कार करते हैं | कबीर के कवित्तों को बकवास कहते हुए साधु कबिर को उसकी जात पूँछता है तो जातिपाँति के विरोधक और ज्ञान के समर्थक कबीर कहते हैं,

"जात न पूछो साधु की, पूछ लीजिओ ज्ञान |
मोल करो तलवार का, पडा रहने दो म्यान"[3]

ब्राह्मण लोग कुम्हार, चमार, जुलाहा आदि हीन जातियों के लोगों को छूना भी पाप मानते हैं | खुद को तुर्क समझनेवाले मुसलमान भी कबीर जुलाहे को हमेशा अपमानित करते हैं | हिंदुओं के अपमान से तंग आकर ड़ोम चमार आदि नीची जाति के लोग इस्लाम का स्वीकार कर लेते हैं फिर भी मुल्ला मौलवी उनसे जानवरों जैसा सलुक करते हैं | हिंदू लोग भी नीचिजाति के मुसलमानों से कोसो दूर भागते हैं | ब्राम्हण लोग मुसलमान नाईयों से बाल तक नहीं कटवाते | एक ब्राह्मण को बाल कटाते समय यह पता चलता है कि नाई मुसलमान है तो वह अपनी धोती समेत गंगा नदी में डुबकी लगाता है ताकि वह छुआछुत के पाप से मुक्ति पा सके | उसकी ये हरकत देखकर रैदास अपने मन की घुटन को निम्नप्रकार से व्यक्त करते हैं,

"जात भी ओछी, करम भी ओछा"

ओछा कसब हमारा

नीचे से प्रभु उँच कियो है,

करे रैदास चमारा |"[4]

रैदास की मधुर आवाज सुनकर मंदिर का पुजारी रैदास को मंदिर में भजन गाने के लिए आमंत्रित करता है | मगर जैसे ही पुजारी को पता चलता है कि रैदास चमार है तो तुरंत ही उसे डंडे से पीटकर मंदिर के बाहर निकाल देता है |

इस प्रकार हिंदू तथा मुस्लिम धर्म के लोग अपने से कनिष्ट जाति वालों से जानवरों जैसा सलुक करते हुए पाये जाते हैं |

3.2.3 शूद्रों की दयनीय अवस्था -

जातिगत भेदभाव की वजह से समाज में शूद्रों की अवस्था जानवरों से भी बदतर है | उनकी अवस्था अत्यंत दयनीय है | हिंदू होने के कारण मुसलमान उनका तिरस्कार करते हैं और शूद्र होने के कारण हिंदू उन्हें घृणा की दृष्टि से देखते हैं | इसप्रकार उनकी स्थिती धोबी के कुत्ते की तरह हो जाती है जो न घर का होता हैं न घाट का | 'कबिरा खड़ा बजार में' इस नाटक में शूद्रों के प्रति हिंदूओं की नफरत का परिणाम यह होता है कि वड़ी तादात में समाज की अस्पृश्य जातियाँ इस्लाम धर्म का स्वीकार कर लेती हैं | उनका मानना हैं कि ऐसा करने से वह हिंदुओ से मिलने वाली प्रताड़ना से बच सकते हैं |

रैदास चमार अपनी बीवी को जोगियों द्वारा उठाकर ले जाने की शिकायत लोगों से करता है | खुद को न्याय मिलने के लिए वह लोगों के सामने गिड़गिड़ाता है तो लोग उसे न्याय दिलाने की ग्वाही देते हैं |

"दूसरा : यह तो ज्यादती हैं |

तीसरा : साधु - सन्तों को गृहस्थ स्त्रियों के साथ

ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए | "[5]

इन्ही मानवता के पुतलों को जब यह पता चल जाता है कि रैदास जाति से चमार है , शूद्र है तो वह उसकी स्त्री 'ज्यानकी' को दोषी ठहराते हैं तथा रैदास को ही कोसते हैं | दोगले चरित्रवाले थे लोग कहते हैं,

"तीसरा : महात्माओं का चरित्र खराब कर दिया
इसकी औरत ने |
दूसरा : अबे इस आफत की परकाला को अपने
बस में नहीं रखा ? "[6]

इस प्रकार हीन जाति के लोगोंपर उच्चवर्णीय अत्याचार करते हैं और उन लोंगोपर अत्याचार होने बाबजूद भी उन्हें सिर्फ इसलिए न्याय से वंचित रहना पड़ता हैं क्योंकि वह शूद्र हैं | समाज में सिर्फ ऊंचीजाति के लोगों को ही न्याय मिलता है, शूद्रों को उससे वंचित रहना पड़ता है | वर्तमान समाज व्यवस्था में भी शूद्रोंपर अन्याय किये जाते हैं | उन्हें पीटा जाता है, उनके घर जलाए जाते हैं | अगर इस अन्याय की फंरियाद पुलिस स्टेशन में की जाती है, फिर भी उनकी तरफ से कोई गवाही नहीं देता | आज भी उच्चजातियों द्वारा निम्नजातियोंपर अत्याचार किए जाते हैं | उन्हें न्याय नहीं मिलता |

3.3. स्त्री - पुरूष संबंध :-

स्त्री तथा पुरूष संसार रूपी रथ के दो पहलू माने जाते हैं | समाज में जो स्थान पुरूष को मिलता है वही स्त्री को मिलना जरूरी है | मगर विवेच्य नाटकों में स्त्री का गौण स्थान, उनकी विवशता का लाभ उठाने की पुरूषों की मनोवृत्ति, स्त्रियों के साथ रहनेवाले उच्चवर्ग के लोगों के अनैतिक संबंध बड़ी ही सफलतापूर्वक चित्रित किए गए हैं |

3.3.1 अनैतिक संबंध :-

विवेच्य नाटकोंमें कुछ स्थानपर स्त्री - पुरूषों के संबंध मधुर दिखाई देते हैं तथा कुछ स्थानपर इन संबंधों को कठोरे रूप दिया गया है | कबीर का विवाह धनिया से हो जाता है |

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

कबीर अपनी नवविवाहिता पत्नी से बेहद प्यार करते हैं | मगर कबीर की पत्नी धनिया कबीर की फक्कड़, बैरागी वृत्ति की वजह से कबीर को जरा भी पसंद नहीं करती है | कबीर से विवाह होने से पहले धनिया एक साहुकार के छैल छबीले बेटे से प्यार करती थी, उसके साथ शादी करना चाहती थी | अन्त में चरित्रहीन धनिया कबीर को छोड़कर डोंडी पीटकर साहुकर के बेटे के पास चली जाती है | उसके साहुकार के बेटे के साथ अनैतिक संबंध हैं | यहाँपर कबीर के वाक्यों से यह ज्ञात होता है कि गृहस्थ जीवन बीताते हुए पति - पत्नी के रिश्तों के दौरान विश्वास होना आवश्यक है | वे एक दूसरे की आवश्यकता के जाने पहचाने तथा उनकी पूर्ति करणे का प्रयत्न करें | अगर वह ऐसा नहीं कर पाते तो गृहस्थी ठीक तरह से नहीं चल सकती |

> "कबीर : ... लोग मुझसे कहते थे तुम्हारी औरत कुलटा है, लेकीन मैने किसी की नहीं मानी | आखिर एक रोज वह डोंडी पीटकर चली गई | रिश्तों को कच्चे सूत से बांधकर नहीं रखा जा सकता ... | "[7]

इस प्रकार नाटककार ने यहाँपर समाज के स्त्री पुरूषों के अनैतिक संबंधोका कारण अर्थ का अभाव भी बताया है | वर्तमान समाज में भी यह समस्या पायी जाती है |

3.3.2 विवशता का लाभ उठाने की मनोवृत्ति :-

समाज में स्त्रियों की विवशताका अनुचित फायदा उठाकर उनपर अत्याचार किये जाते हैं | उनका शोषन किया जाता है | यही बात नाटककारोंने बखुबी दर्शायी है |

कबीर की मुलाकात लोई से हो जाने के बाद कबीर को लोई द्वारा उसकी पिछली जिंदगी के बारे में जानकारी प्राप्त होती है | लोई को जन्म देनेवाली उसकी माँ उसे अपने पेट का पाप समझकर घूरे पर डालकर चली जाती है | एक मठ के महंत उसे उठा लेते हैं और अपनी बेटी की तरह पालते हैं | पर जब कालान्तर से महंत की मृत्यु हो जाती है तब उनका कामांध चेला गद्दीदार बन जाता है जिसकी लोई पर बुरी निगाह होती है | वह एक दिन

संधिप्राप्त होते ही लोई पर जबरदस्ती करता है | महंत के चेले ने लोई की विवशता का लाभ उठाकर उसपर किस प्रकार अत्याचार किये यह बात लोई की बातों से स्पष्ट होती है |

> "लोई - उनकी मृत्यु के बाद उनका चेला गद्दीदार बना | उसकी शुरू
> से ही मुझपर निगाह थी | और एक रोज उसने जबरदस्ती मेरे साथ
> मुंह काला किया | "[8]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि, आधार हीन स्त्री की विवशता का लाभ उठाकर उसे अपनी हवस का शिकार बनाया जाता है | यह विकृति आज भी समाज में पायी जाती है |

3.3.3 रखैल प्रथा :-

कबीर काल की रखैल प्रथा को विवेच्च नाटकोंमें दर्शाया गया है | साधन संपन्न वर्ग संपत्ति के जोर से हर सुख खरीद लेता था | किसी औरत को खरीदना उनके लिए विशेष कठिण नहीं था | समाज में स्त्री सुख पाने के अनेक तौर तरीकें पाये जाते थे | पैसों के साथ साथ मंत्र तंत्र का भी सहारा लिया जाता था | 'इकतारे की आँख' नाटक में महाभैरवी नामक स्त्री को मंत्रतंत्र विद्या हासिल-है | अपनी विद्या के जरीए वह भक्तों की समस्यायों को हल करती है | इसलिए उसके आसपास अनगिनत भक्त मंडराते रहते हैं | उसके पास आनेवाले भक्त ज्यादातर स्त्रीलंपट हैं | भक्त एक जो है उसकी पत्नी पहले सुंदर थी मगर अब वह उसे शूर्पणखा जैसी महसूस होती है | वह उसे त्यागकर सुंदर स्त्रियों का उपभोग लेना चाहता है | वह उच्चाटन मंत्र का प्रयोग कर पत्नी का मन उसकी और से उचटना चाहता है, वह बूढ़ा होकर भी सुंदरियों के पिछे पागल है |

भक्त दो भी स्त्रीलंपट है वह अलग अलग स्त्रीयों का उपभोग लेना चाहता हैं | वह जीस नूरमहवाली मोतीबाई नामक वेश्या पर आसक्त है, उसी पर उसका बेटा भी आसक्त है | उसका सगा बेटा उसके रास्ते का काँटा बना हुआ है | इसलिए वह महाभैरवी के मंत्रतंत्र से उसे हटाना चाहता है | एक वेश्या के लिए वह अपने पुत्र को मटियामेट करना चाहता है | यह

उसकी घिनौनी वृत्ति है | उसके लिए औरतों की कोई कमी नहीं है | इसी वजह से उसके मन में औरतों के प्रति कोई सम्मान की भावना नहीं है | उसकी नजर में औरत पैसोंपर बिकनेवाली वस्तु है | इसलिए अपनी कामवासना की पूर्ति के लिए वह चौदह ब्याह करता है | कितने ही औरतों के साथ उसके अनैतिक संबंध रहे हैं | फिर भी वह बुढापे में और औरतों का उपभोग लेना चाहता है | यह निम्न संवाद से स्पष्ट होता है |

"भक्त दो - जान गई माता सब जान गई माता से क्या छुपा है | हे दुष्ट
विनाशिनी, मुझे औरतों की कमी नहीं | मैंने चौदह ब्याह
किए और इतनी ही रखैलें रख छोड़ी हैं | ... इधर मेरा मन
नूरमहल वाली मोतीबाई पर आ गया हैं ... |"[9]

भक्त दो भी उसी प्रकार का आदमी है |

"भक्त दो - उस रोडे को हटाइए माता | वह मोतीबाई के पास जाने लगा
है | उसपर मूठ चलाइए, उसे मटियामेट कर दिजीए ... |"[10]

उपर्युक्त विवेचन के आधारपर यह पाया जाता है कि किस तरह समाज में स्त्री-पुरूष संबंधोंकी पवित्रता का महत्त्व कम हो गया है | पति पत्नी के संबंधों में आर्थिक विवेचना की वजहसे दरारें पड़ती हैं | समाज में स्त्री-पुरूषों के नाजायज तालुक्कात हैं | अमीर लागों की यह धारणा हैं कि धन के बलपर वह हर सुख खरीद ले सकते हैं |

3.4 नारी का सामाजिक स्थान :-

आज के समाज में नारी खुद के पैरोंपर खड़ी है | वह हरबात पर किसी की मोहताज बन कर नहीं रहती | खुद अर्थार्जन करणे से नारी को आर्थिक स्वतंत्रता मिल गयी है | समाज में उच्च्व वर्ग की नारी हो या निम्नवर्ग की वह पुरूष प्रधान समाजद्वारा प्रताडित ही है | उनके शोषण का शिकार हो रही है | विवेच्च्य नाटकों में समाज की इसी स्थिति को बड़ी खुबी के साथ दर्शाया गया है | विवेच्च्य नाटकों में चित्रित कबीर कालीन समाज में भी नारी की स्थिति कुछ अलग नहीं दर्शायी गयी है | नारी की मान मर्यादा प्रतिदिन कम होती जा रही है | हिंदुओं

में नारियों को थोडा बहुत सम्मान मिलता है | कहीं कहीं उन्हें देवीसमान मान दिया जाता है | मगर मुसलमानों में नारी को भोग विलास का साधन माना जाता है | उसे एक भोग्या के रूप में देखा जाता है | नारी समाज में पुरूषों की सम्पत्ति मानी जाती है | इसी वजह से समाज में नारी को आदर का स्थान नहीं दिया जाता |

3.4.1 बहु विवाह पद्धति :-

कबीर कालीन समाज पुरूषप्रधान होने के कारण पुरूषोंको जादा प्रतिष्ठा दी जाती थी | उनके मायने में स्त्रियों को बिल्कुल ही प्रतिष्ठा नहीं दी जाती थी | पुरूष प्रधान वृत्ती के कारण समाज के पुरूष अपनी मर्जी के अनुसार अपनी जिंदगी बिताते थे | वह अपनी मर्जी के मालिक थे | यहाँ तक कि वे अनेक विवाह भी कर सकते थे | घर की औरतों से अगर उनका जी भर आए तो वह बाहर मनोरंजन के साधन ढूंढ लेते थे | 'इकतारे की ऑख' में भक्त एक इसी प्रकार का आदमी है जो अपनी बीवी के प्रति आकर्षण कम होने के बाद दूसरा विवाह करणे के लिए आतुर है | उच्च वर्ग की स्त्रीयों को थोड़ा बहुत मान सन्मान पति की वजह से मिल जाता है, मगर नीची जाति की औरतों का समाज में जीना भी मुश्किल हो गया है | अगर कोई किसी सुंदर स्त्री को उठा ले जाकर उसके साथ जबरदस्ती करता है तो इसमें कसूर पुरूष का नही बल्कि स्त्री का माना जाता है |

इस प्रकार पुरूष प्रधान समाज में पुरूष वर्ग अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए अनेक विवाह करते दिखाई देते हैं |

3.4.2 नारी : सौंदर्य भोग :-

रैदास चमार की सुंदर बीवी 'ज्यानकी' को दो भ्रष्ट जोगी उठाकर ले जाते हैं तथा उसके साथ बलात्कार करते हैं और उसे लापता कर देते हैं | नीची जाति का रैदास जब उन जोगियों से ज्यानकी के बारे में पूछता है तो वे रैदास की बीवी ज्यानकी को ही इस कृत्यपर दोषी ठहराते हैं | ज्यानकी का सुंदर होना उसकी बदचलनी का कारण बन जाता है | औरत

की सुंदरता की वजह से समाज का आचरण बिघड़ता है ऐसा वे मानते हैं | 'इकतारे की आँख में' इसका स्पष्ट उल्लेख किया गया है |

"तीसरा - महात्माओं का चरित्र खराब कर दिया इसकी औरत ने |

जोगी एक : स्त्री का कर्तव्य है कि अपने सतीत्व पर आँच न आने दे |

जोगी दो : और साधु संतों की सेवा करने में संकोच न बरते |

दुसरा : सुंदर औरतें बदचलन होती हैं |

जोगी एक : समाज का आचरण बिगाड़ती हैं |

जोगी दो : हम पर डोरे डालती हैं |"[11]

तात्पर्य यह है कि समाज में अगर नारी अत्याचार हो जाए तो उसे ही दोषी ठहाराया जाता है | मध्ययुगीन समाज में भी बलात्कार जैसी समस्याओं में ज्यादातर स्त्री को ही जिम्मेदार ठहराया जाता है |

3.4.3 नारी : सामंतवादी मनोवृत्ति का शिकार :-

समाज में सुंदर स्त्रियों को अमीर, साहुकार उंचे ओहदेवाले लोगों की अत्याचारी मनोवृत्ती का शिकार होना पड़ता है | 'कहै कबीर सुनो भाई साधौ' में रमजानिया एक नाचने गानेवाली है | कबीर के कवित्त गानेवाली रमजानिया को सत्ताधारी लोग बूरी नजर से देखते हैं तथा उसे कबीर के कवित्त गाना छोड़ कर अपने साथ जिंदगी बिताने की फर्माइश करते हैं | रमजानिया कबीर के कवित्त गाकर जन जागरण का कार्य करती है | यह बात काशीनगर के कोतवाल को जरा भी पसंद नहीं है | वह चाहता हैं की उनकी कामपूर्ती के लिए रमजानिया उसके पास रह जाए |

"कोतवाल : चुप बे (रमजानिया से) उस जुलाहे के लिए

क्यों अपना खुबसुरत जिस्म बरबाद कर रही हो ?"[12]

जब वह कोतवाल की इस हरकत को करारा जबाव देती है और कबीर को शहंशाहों का शहंशाह कहती है तो रमजानिया को हवालात में बंद करने का आदेश दिया जाता है |

"रमजानिया : उस अलमस्त जुलाहे पर सौ बादशहा
कुर्बान | वह शहंशाहों का शहंशाह है |
कोतवाल : कमजात औरत | देखता हूँ कैसे बचाता है तेरा शंहशाहों का शंहशाहा ?
(सिपाही से) यह खतरनाक औरत है | इसे हवालात में बंद करो |
अभी |"[13]

इस प्रकार उसके संबंध मे यह बात भी फैलाई जाती है कि रमजानिया तथा कबीर के नाजायज ताल्लुकात हैं | तथा रमजानिया कबीर की रखैल है |

3.4.4 **नारी : यौन का शिकार :-**

भारतीय समाज में मुसलमानों के आगमनों के पश्चात स्त्रीयों की मानमर्यादा प्रतिदिन कम होती गयी थी | स्त्री को प्रतिष्ठा का केंद्र बिंदू मानकर स्त्रीयों के लिये युद्ध होने लगे थे | जास पुरूष के पास स्त्रियों की संख्या अधिक होती थी उसे समाज में आदर का स्थान दिया जाता था | इसका परिणाम यह हुआ की स्त्री को पुरूष की संपत्ति समझा जाने लगा था | समाज में हरमों की संख्या बढ़ने लगे थी | मुस्लिम शासक जिस प्रदेश पर आक्रमण करते थे वहाँ धन संपती के साथ सुंदर स्त्रियोंको भी उठाकर ले जाते थे | तथा उनकी हरमोंमें भरती करायी जाती थी | भीष्म सहानीजी ने अपने नाटक 'कबिरा खड़ा बजार में' में इसका विवेचन किया है | अल्लाह का नाम लेकर तलवार उठानेवाले बादशाह तिमूर लंग दिल्ली पर आक्रमण करणे बाद लूटपाट मचा देता है | वह लाखो निरपराध लोगों का कत्ल कर देता है | तिमूर बादशाह के सिपाही धन संपत्ति लूटने के साथ साथ गलियों मे से औरते उठाते रहते हैं |

आज भी समाज में नारी यौन शोषण का शिकार हो रही है | वास्तव में आर्थिक परावलंबत्व नारी का सबसे बिकट परावलंबत्व हैं | लेकिन आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी नारी को भी बचपन में पिता, युवावस्था में पति और वृद्धावस्था में पुत्र पर निर्भर रहना पड़ता है | तथा उनकी अपेक्षाओं की पूर्ति करने के लिए स्वयं को दांव पे लगाना पड़ता है | 'इकतारे की

ऑंध में' नाटक का निर्देशक अपने उस नाट्यदल को ग्रांट मिलाने हेतु नाटक की अभिनेत्री को आई.ए.एस.ऑफिसर गुप्ता तथा तत्कालीन मंत्री विनायकप्रसाद नारायण ठाकुर के समक्ष पेश होने का सुझाव देना है | वह चाहता है कि अभिनेत्री के स्त्रीत्व का उपयोग करके वह अपनी नाट्संस्था धूमधाम से चलाये |

"निर्देशक : गुप्ताजी आई.ए.एस. ऑफिसर हैं | फाईल के फितों से छेडछाड की उन्हें आदत है |

निर्देशक : अगर वो तुम्हारे कंधे को फाईल समझ ले तो तीन साल भी वहांसे हाथ नहीं उठाते | फाईल को दबाये रखने में उन्हें महारत हासिल है | ठाकूर विनायकप्रसाद नारायण सिंह से बात हुई ?

अभिनेत्री : मैंने फोन पर उनसे हमारी संस्था के लिए आशीर्वाद मांगा था | उन्होंने कहा की आशीर्वाद तो वह सिर्फ अपने घर पर ही देते हैं |"[१२]

इस प्रकार अपने नाटक को वित्तीय सहाय्यता प्राप्त करने के लिए निर्देशक शिक्षित नारी को मंत्री के घर पर जाने की आज्ञा देता है | परिस्थिति से मजबूर अभिनेत्री यह स्वीकार भी करती है | आज भी समाज में हम अपने इर्द गिर्द देखते हैं कि अपना काम निपटाने के लिए नारी के स्त्रीत्व का उपयोग किया जाता है | उसे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल किया जाता है |

3.4.5 नारी : कामुक दृष्टि का शिकार :-

कामकाजी नारी को समाज में हरपल संकटोंका सामना करना पड़ता है | वह अपना दायित्व निभाते हुए स्वयं को सुरक्षित रखने का प्रयत्न करती है मगर वह जहाँ पर नौकरी करती है उस पुरूषप्रधान समाज में पुरूषों की वासनामय दृष्टि का शिकार होना पड़ता है |

अपनी नौकरी को बचाने के लिए वह अपने से बड़े ओहदोंपर काम करने वालों की मर्जी संभालने का कार्य मजबूरन करती है |

माणि मधुकर के नाटक 'इकतारे की आँख' की अभिनेत्री को भी इस दुर्धर मार्ग से गुजरना पड़ता है | नाटक का निर्देशक भी उसे उपभोग्य वस्तु समझता है | वह अभिनेत्री के साथ बहुत ही घिनौने तरीके से पेश आता है | अपनी वासनापूर्ति के लिए वह अभिनेत्री का उपयोग करना चाहता है | हर वक्त 'मंच की मर्यादा' की ओर ध्यान खिंचते हुए अभिनेत्री से अकेले में गीन रूम में मिलना चाहता है | निर्देशक तथा उसके साथ काम करनेवाले और लोग भी अभिनेत्री की ओर व्यंग्यपूर्ण कटाक्ष डालते है | नाटक के रिहर्सल के बहाने अभिनेत्री को गड्डेओ में बुलाकार उसका शोषण किया जाता है |

"अभिनेत्री : आपको याद है, आपने उस रोज रिहर्सल खत्म होने पर यहीं, पूरी एक बोतल पी थी मुझे सामने बिठलाकर ! और उसके बाद आपने मुझे गोंद में लिटाकर प्यार व्यार के शेर कहे थे |"15

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि कबीर कालीन समाज में नारी को सन्मान नहीं दिया जाता था | जमीन जायदाद की तरह नारी को पुरूषों की उपभोग्य वस्तु समझा जाने लगा था | पुरूष नारी को हेय वस्तु समझकर उसका मजाक उड़ाते थे | नारी का समाज में कोई सम्मान का स्थान नहीं था | उसे तुच्छ समझा जाता था | उसी प्रकार आज भी समाज में नारी का दुय्यम स्थान दिया जाता है | उसे एक दिल बहलानेवाली वस्तु के रूप में देखा जाता है | इस बात को बडी खुशी के साथ दर्शाया गया है | समाज में नारी का उपयोग अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए किया जाता हैं |

३.६ अज्ञान, निरक्षरता एवं अंधश्रद्धा :-

समाज में पाप पुण्य की अवधारणा, स्वर्ग - नरक, मृत्यु, आत्मा आदि की कल्पनाओं में से अंधश्रद्धा का उदय होता है | यह अंधश्रद्धाएँ अज्ञान तथा निरक्षरता की उपज होती है | विवेच्य नाटकोंद्वारा अंधविश्वास तथा कालबाह्य रूढ़ियों को जड़समेत उखाड़ने की कोशिश की गई है |

हिंदू समाज विविध जाति संपदायों में विभाजित हैं | अलग - अलग जाति संप्रदायोंमें रहन सहन, धार्मिक धारणाओं को लेकर अनेक अंधश्रद्धाएँ भरी पड़ी हुई हैं | अज्ञानवश लोग इन अंधश्रद्धाओं को ही धर्म की महत्त्वपूर्ण वातें मान बैठे हैं | समाज में जातिव्यवस्था चरम - सीमा पर पहुँचने के कारण ब्राह्मणो को ही पढ़ने लिखने का अधिकार प्राप्त है | शूद्र तथा नीची जाति के लोगों को पढ़ने लिखने का अधिकार प्राप्त नहीं हैं इसका परिणाम यह होता है कि शूद लोग निरक्षर रहे तथा धर्म की बातों का सही ज्ञान उन्हें नहीं हो सका | इनके अज्ञान का फायदा उठाने के लिए धर्म के ठेकेदारोंने अपना मनमानी कारोबार शुरू कर दिया | वेद पुराण पढ़ने का अधिकार सिर्फ उच्चवर्णियों को है इस बातपर व्यंग्य करते हुए कबीर कहते हैं |

"वेद किताब पढ़े वे कुतबा, वे मौलाना, वे पाण्डे |"[16] तथा पुस्तकीय भाषा का मजाक उड़ाते हुए कबीर कहते हैं पुस्तकिय ज्ञान एक अंधा कुप हैं | तथा अपनी बोलचाल की भाषा बहते नीर के समान है जिसमें हर मोड पे नये ज्ञान का समावेश होता है |

> "संस्कृत अन्धा कूप है,
> भाषा बहता नीर |"[17]

अज्ञानी होने के कारण अपने हकों से अनभिज्ञ शूद्रोंपर समाज के उच्चवर्णीय लोगों द्वारा अत्याचार किये जाते हैं | उनके साथ जानवरों से भी बदतर सलुख किया जाता है | लेकिन अज्ञान के कारण वह खुदपर होते अन्याय के खिलाफ आवाज तक नहीं उठा पाते | सालों से उन्हें उच्चवर्णीय समाज ने दबोचकर रख दिया है | कमजात लोगों को इन्सान की तरह जीने का कोई हक नहीं है | वे इन्सान के इन्सान के नाते गले लगाना चाहते हैं | पर

उच्चवर्णीय उनका स्वीकार नहीं करते | इसके विरूद्ध आवाज उठानेवाले कबीर एक नीचीजाति के जुलाहा होने के कारण उन्हें हरवक्त तकलिफ का सामना करना पड़ता है ;

"कायस्थ : सुनो कबीरदास, यह काशी है | लोग तुम्हें कुचल देंगे | यहाँ का राजा हिंदू है, पर कोतवाल तुर्क है | लोदी बादशाह की अमलदारी है | और तुम खुद एक मामुली जुलाहे हो |"[18]

कबीर ने मुल्ला और पण्डों दोनों को भी नाराज कर रखा है | इसलिए वह कबीर पर आये दिन अत्याचार करते रहते हैं | ताकि वह इन लोगों के खिलाफ आवाज नहीं उठा सके |

निरक्षरता के कारण कोई भी समाज को ठग सकता है | काशी में सच्चे भक्तों के बजाय ठगों की भरमार है | इन ठगों में सामान्य लोगों से ज्यादा खुद को धर्म के सर्वेसर्वा समझने वाले धर्म के ठेकेदार अग्रेसर हैं | मुल्ला मौलवी स्वयं को खुदा का बंदा बनाकर लोगों को ठगते हैं | और लोग अंधश्रद्धावश उनकी बतायी गयी बातोंपर विश्वास करते हैं | एक मुल्ला अपनी बनी वनाई बातों से लागों को ठगता रहता है, वह कहता है वह अंधे लोगों को आँखें दे सकता है | वह देख सकते हैं | वास्तव में वह लोग उन्ही के चमचे होते हैं | पंडित जोतसी बिमारों को अच्छा करते हैं | असल में यह उन्ही के लिखाए पढ़ाए लोग बिमार तथा अंधे होने का नाटक करते हैं और दुनिया के ठगते हैं | फिर चमत्कार की ड़ोंडी पिटवाई जाती है ; तथा अल्ला के नामपर खैरात जमा की जाती है |

'कबिरा खड़ा बाजार में' से यह दिखाया गया है कि, काशी में लोगों की अंधश्रद्धा चरमसीमा पर पहुँच गयी है | लोग आत्महत्या कर मुक्ति पाने की कोशिश कर रहे हैं |

लोगों की यह धारणा बन चुकी हैं कि मगहर में मौत आ जाने से नरक मे जायेंगे | काशी में मृत्यु आने पर स्वर्ग की प्राप्ति होती है, मोक्ष प्राप्त होता है | अंधश्रद्धा की वजह से काशी में प्राण देकर मुक्ति पाने वालों की होड़ लगी हुई है | कुंछ लोग मंदिरों के सामने जान देकर स्वर्ग में जाना चाहते हैं |

"नागरिक एक : उनका विचार हैं काशी में मरेंगे तो मोक्ष प्राप्त होगा सीधे
स्वर्ग जायेंगे |
कबीर : (सोच में पडकर) कैसा अंधा और भयानक विश्वास है |"[19]

इस प्रकार यह पता चलता है कि अज्ञान तथा निरक्षरता की वजह से लोग भयानक हालात में अपनी जिंदगी गुजारते हैं | वह दिन रात मेहनत करते हैं लेकिन उनके मेहनत की कमाई साहुकार बनिये उड़ा ले जाते हैं | अंधश्रद्धावश लोग अपनी जिंदगी अपने हाथों से खत्म करते हैं |

3.6 शोषण, अन्याय संवेदनशून्यता :-

नीची जाती के लोगों की पैदाइश ही इसलिए होती हैं कि वह बार बार समाज के उच्चवर्णियों द्वारा प्रताड़ित होता रहें | समाज के उच्चवर्णीय लोगोंद्वारा गरीब, निम्नजाति के लोगोंपर आयेदिन अत्याचार होते रहतें हैं | समाज की उच्चजातीय चाहे वह हिंदू हो या मुसलमान उनपर तरह तरह के जुल्म करते रहते हैं | निम्नजाति वालों को अनेक यातनाएँ दी जाती हैं | ऐसे शोषण तथा अन्याय के खिलाफ आवाज उठानेवाले कबीर को नाटककार नरेंद्र मोहन ने अपने नाटक "कहे कबीर सुनो भाई साधो" में चित्रित किया है |

3.6.1 शोषण :-

हर चोरी डकैती का इल्जाम गरीब तथा बेवस लोगों के माथे मढ दिया जाता है | कोतवाल की बीवी का झुमका बीवी का भाई चुराकर ले जाता है | लेकिन सिपाही लोग जुलाहापट्टी में धरपकड़ मचा देते हैं | कोतवाल के इशारे पर ही कबीर के पड़ोसी के घर में आग लगाई जाती है | कबीर लोगों को समाजकटकों के खिलाफ भड़काना बन्द करें इसलिए बार बार कबीर पर जुल्म किया जाता है | कबीर समाज के लोगों मे जागृति निर्माण न करे इसलिए कबीर के झोपड़े में आग लगवाई जाती है | नीची जाति के लोगों को हमेशा

उच्चवर्गीय तथा अधिकारी वर्ग के अत्याचार, शोषण का शिकार होना पड़ता है | शहर में चोरी डकैती हो जाए, दंगा फसाद हो जाए तो मुफ्त में शूद्र लोग मारे जाते हैं |

गरीब, लाचार लोगोंपर जबरदस्ती कर लगवाये जाते हैं | अन्याय के खिलाफ लड़ने में असमर्थ जनता का शोषण किया जाता है | 'इक्तारे की आँख' में मणिमधुकर द्वारा यह उचित प्रकार से दर्शाया गया है | सत्ता लोलुप कोतवाल जनता की समस्या को ढूँढ़कर उनका हल करने के बजाय अपनी सत्ता का दुरूपयोग करते हुए जनता को समस्याओं में धकेल देता है | जिससे निम्नजाति के लोगों की हालत खराब हो जाती है | वह गरीब, बेबस, खाने के लाले पड़नेवाले लोगों के उपर शाहीखाने के हाथी पालने की जिम्मेवारी डाल देता है | इसका विरोध करने वाले महंगू पर जुल्म किया जाता है |

3.6.2 अन्याय :-

कबीर न्याय के उपासक रहे हैं | वे झूठे साधु और मुनियों की खिल्ली उड़ाते हैं | हिंसा करने वाले धर्म के ठेकेदारों को रोककर उन्हें अहिंसा की तरफ प्रवृत्त करते दिखाई देते हैं | जाति से मुसलमान होकर भी कबीर जीव की हत्या करनेवालों को फटकाते हैं | कबीर उनसे प्रश्न करते हैं अगर तुम जीव की हत्या करने को (हिंसा को) धर्म कहते हो, तो फिर अधर्म क्या है ? "इस प्रकार वध करनेवाला तू अपने आपको मुनि समझ बैठा हैं | फिर कसाई किसे कहोगे ?"[20]

इस पर बौखला कर साधु उनपर कोडे बरसाना शुरू कर देते हैं | वास्तव में यह साधु साधु न होकर साधु के भेस में छिपे हुए गुंडे हैं | काशी में गुंडेरूपी साधुओं में तथा सारहीन मुल्लाओं में खास तरह की सांठ-गांठ हैं | कोतवाल भी इन्हें शह देता है | क्योंकि कोतवाल शहर में बदअमनी फैलाना चाहता है | उसी की वजह से ये समाजकंटक भोले-भाले लोगों को सताते हैं | गुंडेरूपी साधु महंतों के आखाडों से तथा अड्डोंसे शक्ति बटोरते हैं | इस शक्ति का दुरूपयोग समाज के असहाय्य लोगोंपर करते हैं तथा अपनी झोली भरते हैं |

3.6.3 संवेदनशून्यता :-

काशी नगर का कोतवाल संवेदनशून्यता का बड़ा ही सटीक प्रतीक है . ऐसे कोतवाल से शहर के शूद्र परेशानी उठा रहे हैं | कोतवाल ने फिलखाने के हाथियों की तरह समाज के पंडित, मुल्लाओं तथा जोगियों के खानपान, भोग आराम की जिम्मेदारी अलग अलग लोगोंपर डाल रखी है | कोतवाल की संवेदनशून्यता का परिचय तो कबीर पर होने वाले अत्याचारों से ही होता है | कोतवाल कबीर को दबाने की हर मुमकिन कोशिश करता है | संवेदनशून्य कोतवाल कबीर के हाथ पैर जंजीरों से बांधकर उसे नदी में डूबाता हैं, कबीर को जिन्दा आग में झोंक दिया जाता हैं | उसे मस्त हाथी के सामने डाल दिया जाता है | अंधे भिखारी नन्दू को कोड़ों की फटकार से जान से मार डाला जाता है | धर्म की जड़े खोदने का इल्जाम कबीरपर लगाकर उनकी बस्तियाँ जलाई जाती हैं | छोटे बच्चे का कत्ल करनेवाले सिपाही की तरक्की के बारे में सोचने वाला कोतवाल बहुत ही संवेदन्‌शून्य व्यक्ति है |

काशीराज भी अपनी प्रजा की तरफ ध्यान नहीं देते | बस मुगल बादशहा को बिदागी भेजना ही वह अपना कर्तव्य समझते हैं | उन्हें अपनी प्रजा की समस्याओं की कोई पर्वा नहीं है | वह अपने रंगमहल में निश्चिंत होकर रहते हैं समाज में धर्म का कोई महत्त्व नहीं रहा, चारों ओर अधर्म का बोलबाला है | बनिये तथा साहुकार आम जनता का शोषण कर उनकी मेहनत की कमाई स्वयं गटक जाते हैं | गरीबों, अज्ञानों को लूटकर दान धर्म करते फिरते हें | तथा भोली-भाली श्रद्धालु जनता से दुआएँ पाते हैं | गरीब, बेसहारा, निम्न जाति के लोगों की बस्ती हटवाकर वहाँ मंदिर, मसजिद बनवाये जाते हैं | शहर में चारों तरफ यही ढोंग चल रहा है |

> "राजा सोया रंग महल में, धर्म अधर्म सभी इक सार
> शोषण की चक्की में पीसें जनको बनिये साहुकार
> पहले लूटें, फिर बनकर दानी, भोगे यश की जैकार
> सौ घर बार उजाडें, और बनवायें मंदिर मस्जिद चार |"[21]

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता हैं कि राजा, अधिकारी वर्ग, उच्चवर्गीय, वनिये, साहुकार आदि आम जनता का शोषण करते हैं। अधिकारी वर्ग अपने अधिकार का दुरूपयोग करते हुए सामान्य जनता के साथ बड़ी बेहरमी से पेश आते हैं |

3.7 सामाजिक कुप्रथा, बाह्याचार, भ्रष्टाचार :-

कबीर कालीन समाज में अनेक कुप्रथा, बाह्याचार तथा भ्रष्टाचार का बोलबाला था | जिनकी चर्चा विवेच्य नाटकों में खुब मात्रा में हो चुकी हैं |

3.7.1 सामाजिक कुप्रथा -

काशी नगरी को चारों तरफ से सामाजिक कुप्रथाओं ने घेर रखा हैं | परंपरा से चली आई हुई प्रथा का जाल समाज में चारों तरफ फैला हुआ है | खुद को जोगी, परम ज्ञानी समझने वाले लोग हाथों में बरछी, भाला और तलवार लेकर घुमते हैं | हाथों में हथियार लेकर घूमनेवाले साधुमहाराज पलभर में जगत् उद्धार तथा पलभर में मारकाट करते हुए पाये जाते हैं |.

समाज में यह प्रथा है कि योग साधना, जप - तप, यागयज्ञ आदि कार्य सिर्फ ब्राह्मणही कर सकते हैं | कमजात - बदजात लोग भगवान की सेवा नहीं कर सकते | अगर कोई यह प्रथा तोड़ना चाहे तो उन्हें डंड़ो की मार खानी पड़ती है |

> "एक :- महाराज योग साधना करनेवाले को घर गिरस्ती छोड देना चाहिए ?
> मेरी ओर देखकर बोले कोन जात ? हमने कहा 'भगवान में आपका
> सेवक हूं |' वह फिर तेवर चढ़ाकर बोले 'कौन जात ?' हमने कहा
> "कमजात, वदजात | हम चमार हैं मालिक |" इसपर साधुमहाराज ने
> दंडा उठा लिया और हम वहाँ से चले आये |'"[22]

जिसके हाथ में बल है उसे ही सन्मान दिया जाता है | आक्रमणकारी योद्धा लौटते वक्त अपने साथ हसीन से हसीन औरते, बच्चे, जल्लाद आदि को जबरदस्ती ले जाते हैं | नीची जातवालों की स्थिती इतनी दयनीय है कि धर्म के उपासक उन्हें दीक्षा भी नहीं देते |

3.7.2 बाह्याचार :-

भीष्म साहनी जी ने 'कबिरा खड़ा बजार में' में बाहयाचार दर्शाया है | समाज में धार्मिक भावना को गौण स्थान देकर बाह्याचार को महत्त्व दिया जा रहा है | एक ही जाति में अलग अलग जातियाँ पायी जाती हैं | अपना अलगाव प्रदर्शित करने का लोग बेबस प्रयत्न करते रहते हैं | जैसे ब्राह्मणों में कंई अलग उपजातियाँ पाई जाति हैं | उनमें शैव हैं, वैष्णव हैं, तथा शाक्त हैं | वैष्णव लोग सफेद, शाक्त लोग लाल टिका तथा तीन रेखाएँ बीच में लाल बिन्दी इस पद्धति से सीधे रूख का टिला लगानेवाले लोग शैव कहलाते हैं | माला फेरकर, तिलक लगाकर, भगवान की पूजा करने का नाटक करते हैं | अगर किसी रास्ते से मठ के महंत की सवारी निकल रही है | तो उस रास्ते को गंगाजल छिड़ककर पवित्र बनाया जाता है | रास्ते पर खड़े हुए नीचजाति के लोगों का साया मंहतपर न पडे इसलिएं उन गरीब लोगों को चाबूक मारकर हटाया जाता है |

आखाड़े के महंत अपने अनुयायियों के साथ भाले, नंगी तलवारे आदि हथियार लेकर अपने धर्म की रक्षा करते हुए पाये जाते हैं | आँखों में बडप्पन लिए ये साधु महाराज रास्ते में मुँह में पानी भर कर कुल्ला करते हैं जिसे सामान्य स्त्री पुरूष, भक्तगन तीर्थ समझकर अपने माथे पर, कानोंपर, छाती पर लगाते हैं | महन्त के चरण धोने पर जो जल इकठठा किया जाता है उसे लोग तीर्थ समझकर पिते हैं, मस्तक पर लगाते हैं |

3.7.3 भ्रष्टाचार :-

कबीर काल में सामाजिक प्रथा, बाह्याचार, आड़ंबरों का बोलबाला पाया जाता है | उस काल की तरह वर्तमान में भी भ्रष्टाचार समाज में चारों तरफ बौखलाया हुआ है | समाज में

जिसके हाथ में सत्ता है ताकत है उसे ही सलाम किया जाता है | चाहे उसकी नियत कितनी भी बुरी क्यों न हो | औरतों को अपने फायदे के लिए इस्तमाल किया जाता हैं | उन्हें अपनी संस्थाओं, नाट्यदलों को ग्रांट देने के लिए मंत्रियों, अधिकारी वर्गों का दिल बहलाना पड़ता है | वर्तमान समाज में भी स्त्रियों का शोषण हो रहा है | समाज में पूंजीपतियों की ही वाहवा की जाती है | उन्हें भगवान से भी बढकर स्थान दिया जाता है | चाहे वह भ्रष्टाचार के पुतले ही क्यों न हो | उनसे मिलनेवाली रूपयों की मदत को देखकर उन्हें हर तरह से खुश रखने का प्रयत्न किया जाता है | यहाँ तक वे अपनी नाटक कंपनी को ग्रांट मिलने के लिए निर्देशक नाटक के प्रारंभ में गणेश वन्दना छोड़कर मंत्री विनायकजी की वंदना करने का आदेश देता है |

निष्कर्षतः कहा जा सकता है की अनेक कुप्रथाओं से भरे समाज में निची जाति वाले लोगो को दीक्षा से भी वंचित रहना पड़ता था | एक ही धर्म अलग अलग संप्रदायों में बँटा हुआ था | आज के युग में भी इस स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया है | समाज उच्चवर्गीय लोग निम्नवर्गियों के साथ बद से बदतर तरीके से पेश आते हैं |

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कबीर पर आधारित विवेच्य नाटकों का उद्देश्य तत्कालीन समस्यायों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करना है |

कबीरकाल के समाज में अनेक सामाजिक समस्याओंका बोलबाला पाया जाता है | जिनमें प्रमुख रूप से जाति - पाति की समस्या, स्त्री पुरूषों की विविध समस्याएँ, नारी समस्या, अज्ञान तथा निरक्षरता की वजह से होने वाला शोषण, सामाजिक प्रथा तथा भ्रष्टाचार की समस्या का विवेचन किया गया है | हिंदू तथा मुस्लिम इन दो धर्मो में भी अलग अलग जातियाँ अपने हाथपैर पसारे हुए पाई जाती हैं | इस वजह से भी समाज में अपनी जात को सर्वश्रेष्ठ बनाने की होड लगी हुई है | इन दोनों धर्मो में उच्चजातियों का निम्न जाति के लोगों से बर्ताव

स्पष्ट किया गया है | उच्चवर्गीय लोग स्त्री को एक उपभोग्य वस्तु समझकर उसकी मजबुरी का फायदा उठाते हुए पाये जाते हैं |

निरक्षरता के कारण फैली हुई मिथ्याधारणाएँ नागरिकों का जीना हराम करती हुई पायी जाती हैं | चोरी, डकैती के इल्जाम बेवजह गरीबों के सर मढ़ दिये जाते है | योग साधना, जप - तप के सहारे खुद को सर्वश्रेष्ठ बताकर पाखण्डियो दवारा जनता का शोषण इस अध्याय में पाया जाता है |

संदर्भ सूची

			पृष्ठ
1	संत काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता	: रविंद्रकुमार सिंह	53
2	कबिरा खड़ा बजार में	: भीष्म साहनी	30
3	कहै कबीर सुनो भाई साधो	: नरेंद्र मोहन	25
4	कबिरा खड़ा बजार में	: भीष्म साहनी	60
5	इकतारे की ऑख	: मणि मधुकर	21
6	- वही -		22
7	- वही -		64,65
8	- वही -		63
9	- वही -		43
10	- वही -		43
11	- वही -		22,23
12	- वही -		70
13	- वही -		71
14	- वही -		26
15	- वही -		30,31
16	कबिरा खड़ा बजार में	: भीष्म साहनी	88
17	- वही -		88
18	- वही -		91
19	इकतारे की ऑख	: मणि मधुकर	70
20	कहै कबीर सुनो भाई साधो	: नरेंद्र मोहन	27
21	इकतारे की ऑख	: मणि मधुकर	59
22	कबिरा खड़ा बजार में	: भीष्म साहनी	53